c. आ *id.* Hit. 68.9.: दर्पाध्मात·

c. आ praef. सम् *id.* Mah. 2.1925.: शङ्खान् समादध्मुः·

c. उप *id.* Mah. 3.11706.: शङ्खम् उपाध्मासीत्; Man. 4. 53.: ना ऽग्निम् मुखेनो ऽपधमेत्·

c. प्र *id.* A. 6.12.: शङ्खम् उपादाय ... प्राधमन् तम्; Bh. 1.14.: दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः·

c. वि difflare, dispellere, discutere. A. 3.28.: (ubi cum ed. Calc. व्यधमम् pro न्यधमम् legendum) शरीराणि ए-कीभूतानि ... तान्य् अहम् व्यधमम् पुनः; 7.24.: तान् (बाणान्) व्यधमं शरैः; 8.10.: ततो ऽहम् अग्निं व्य-धमं सलिलास्त्रेण; Mah. 1.5462.: व्यधमद् अनीकानि क्षणात्; R. Schl. II. 80.8.: अपरे वीरणस्तम्बान् ... व्य-धमन्ति स्म दुर्गाणि स्थलानिच·

ध्माङ्क्ष् 1. *P.* (घोरवासिते *K.* काङ्क्षे घोररुते *V.*; scribitur ध्माक्ष्, v. gr. 110a).) *i. q.* द्राङ्क्ष्. V. ध्राङ्क्ष्, द्राङ्क्ष्, ध्वाङ्क्ष्·

ध्या v. ध्यै·

ध्यान *n.* (r. ध्यै s. अन) contemplatio, meditatio. Bh. 12. 12. N. 2.3.

ध्यै 1. *P. interdum A.*, etiam ध्या 2. meditari, cogitare. R. Schl. I. 1.71.: ध्यायन्तीन् ददर्श; 9.43.: ध्यायमानश्च तन् दृष्ट्वा; N. 12.100.: ध्यात्वा चिरम्· *Cum acc. rei.* Man. 9.21.: ध्यायत्य् अनिष्टञ् चेतसा; Bh. 2.62. 12. 6.: ध्यायन् विषयान्; Mah. 3.13209.: शिवेन ध्याहि सपुत्रबान्धवम्· (Gr. *θέα, θεάομαι*; respiciatur sanscritum विद् scire in latinâ, बुध् scire in zendicâ linguâ significare videre; respiciatur etiam *εἴδω, οἶδα*; cf. Pott. I. 231.)

c. अप et समप devovere, exsecrari; mala precari *alicui.* Mah. 3.13652-56.: ताम् अवेक्ष्य ततः क्रुद्धः समप-ध्यायत द्विजः, अपध्याताच विप्रेण न्यपतद् धरणी-तले·

c. अभि *i. q. simpl.* Man. 1.8. Mah. 3.11238.

c. अव spernere. R. Schl. I. 25.12.: अवध्यात (*cf.* अव-धीर्, अवमन्·

c. उप *i. q. simpl.* Mah. 1.3848.: सो ऽपध्याता भगवता·

c. नि *id.* Bhatt. 14.65.: तन् निदध्यौ·

c. नि praef. अभि *id.* R. Schl. I. 28.7.

c. प्र *id.* N. 19.3.: प्रदध्यौच महामनाः; Mah. 1.1783.: प्रदध्यौ राजानम् प्रति· Putare, credere, habere. Mah. 1.7013.: दृष्ट्वा तु तान् ... भस्मावृतान् इव हव्यवा-हान् कृष्णः प्रदध्यौ·

c. प्र praef. सम् *i. q. simpl.* Mah. 3.1411.

c. सम् *id.* M. 2.8.

ध्रज् 1. *P.* (गतौ) ire. *Cf.* धृज्, ध्रञ्ज्, ध्रिज्, ध्वज्, ध्वञ्ज्·

ध्रञ्ज् 1. *P.* (scribitur ध्रज्, gr. 110a).) *id.*

ध्रण्, ध्वण्, ध्रॄण् (ध्वाने) sonare. *V.* धण्, ध्वन्, स्वन्·

ध्रस्, उध्रस् (ut videtur, pro उद्ध्रस् i. e. ध्रस् praef. उत्) 9. *P.* 10. *P.* ध्रस्नामि, उध्रस्नामि, ध्रासयामि, उध्रासया-मि (उत्क्षेपे *K.* उत्क्षेपे उञ्छे *V.*) extollere, levare; spicas colliger. (*Cf.* ध्वंस्.)

ध्राख् 1. *P. i. q.* द्राख्·

ध्राघ् 1. *A.* (शक्तौ) posse. *Cf.* द्राघ्·

ध्राङ्क्ष् 1. *P.* (scribitur ध्राक्ष्, gr. 110a).) *i. q.* द्राङ्क्ष्. *V.* ध्माङ्क्ष्, ध्वाङ्क्ष्·

ध्राड् 1. *A. i. q.* द्राड्·

ध्रिज् 1. *P. i. q.* ध्रज्·

ध्रु 1. *P.* et 6. *P.* ध्रवामि, ध्रुवामि (स्थैर्ये सर्पणे) 1) fixum esse. 2) ire. (V. ध्रुव, ध्रू, द्रु et cf. lith. *drûtas* firmus, solidus, robustus; goth. *traua* confido, nostrum *traue.*)

ध्रुव (a praec. s. अ) certus. Br. 1.15. N. 6.11. 26.11. — ध्रुवम् *Adv.* certe. H. 1.26. Br. 1.9. N. 13.27. (Hib. *dearbh* «sure, certain, true, fixed»; germ. vet. *triu, triuwi, ga-triu, ga-triuwi, ga-triwi* fidelis; nostrum *treu, getreu.*)

ध्रेक् 1. *A. i. q.* द्रेक्·

ध्वंस् 1. *A.* decidere, labi. Mah. 1.3596.: नन्दने स्थितम् माम् अब्रवीद् ध्वंसे ऽति· *trop.* perire. Bhatt. 14. 55.: प्राणा दध्वंसिरे; R. Schl. II. 34.24.: म्रियतान् ध्वं-सताम् वे ऽयम्· — पांशुध्वस्त pulvere obrutus. N. 12. 115.; रजसा ध्वस्त *id.* R. Schl. II. 58.3. *Caus.* caedere.